इसी क्रम में नवागढ़ के गीतकार रमेश कुमार सिंह चौहान के एक गीत के हिस्से में बासी का सुंदर प्रयोग दिखलाई पड़ता है–

जुन्ना नाँगर बुढ़वा बइला, पटपर भुइयाँ जोतय कोन।
बटकी के बासी पानी के घइला, संगी के ददरिया होगे मोन।।

निष्कर्षः–

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि छत्तीसगढ़ के जनजीवन में ''बोरे–बासी'' महत्वपूर्ण पारंपरिक खाद्य प्रदार्थ के रूप में प्रसिद्ध है। गर्मी के मौसम में छत्तीसगढ़ की ग्रामीण जनता का यह प्रमुख आहार है। छत्तीसगढ़ में चावल की पर्याप्त उपलब्धता है। बोरे–बासी एक सस्ता आहार है, जो बहुत जल्दी तैयार हो जाता है। इसीलिए छत्तीसगढ़ की आम जनता के साथ–साथ यह किसान, श्रमिक और मेहनतकश लोगों की पहली पसंद है। नए वैज्ञानिक शोध के उपरांत पता चलता है कि यह स्वास्थ्य की दृष्टि में पौष्टिक गुणों से भरपूर है। छत्तीसगढ़ अंचल की लोकसंस्कृति के अतंर्गत लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकनाट्य आदि विधाओं में इसको महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

संदर्भ सूचीः–

1. डॉ. सुधीर शर्मा – बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
2. देवेन्द्र कश्यप – नवभारत टाईम्स, 1 मई 2022
3. डॉ. ओमप्रकाश डहरिया और श्री जी.एस. केशरवानी – गर्मी के मौसम में गुणकारी है बोरे–बासी, छत्तीसगढ़ जनसंपर्क, रायपुर (छ.ग.)।
4. परदेशी राम वर्मा – बासी अऊ तियासी, बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
5. अरूण कुमार निगम – छत्तीसगढ़ काव्य मा छत्तीसगढ़ के बासी, बड़ सुग्घर बोरे–बासी, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
6. डॉ. सत्यभामा आड़िल–छत्तीसगढ़ भाषा और संस्कृति,विकल्प प्रकाशन,रायपुर (छ.ग.)।
7. डॉ. शकुन्तला वर्मा– छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद (उ. प्र.)।
8. दयाशंकर शुक्ल–छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन,वैभव प्रकाशन रायपुर (छ.ग.)।
9. छत्तीसगढ़ के बोरे–बासी को ओडिशा के पखाल सा पहचान मिले – deshdigital.in
10. ये है बोरे–बासी की अच्छाई गर्मी–लू से करेंगी लड़ाई – नयी दुनियां 1 मई 2022
11. गर्मी और लू से बचना है तो खाइए ये बोरे–बासी – www.patrika.com.
12. छत्तीसगढ़ का बोरे–बासी उत्सव – www.hariboomi.com.

☆☆☆